मेरा सन्देश, मार्च, 2022

विश्वभारती एक प्रबल नदी है जो गंभीर बाधाओं के बावजूद अपने विशिष्ट प्रवाह को आगे बढ़ा रही है। यह एक नदी है जो 1921 में भारत के एक महान सपूत गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित की गई थी। यह एक प्रबल नदी है जिसके अस्तित्व में आने के बाद से कोई भी बुरी ताकत इसके प्रवाह को रोकने में सफल नहीं हुई है। जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है, विरोधियों द्वारा इसके प्रवाह को रोकने या इसकी दिशा बदलने के लिए लगातार प्रयास किए गए, ताकि जबरन यह स्वीकार कराया जा सके, जिसे वे अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए उचित मानते हैं। फिर भी, गुरुदेव टैगोर के आशीर्वाद से, उनमें से कोई भी कभी सफल नहीं हुआ, क्योंकि इतिहास से पता चलता है कि बुरी ताकतें उन लोगों की तुलना में स्वाभाविक रूप से कमजोर हैं, जिन्होंने हमेशा- तीन 'C' Concern, Care और Compassion (चिंता, परवाह और करुणा) को अपना कार्य का आधार बनाया जो गुरुदेव के राजनीतिक-वैचारिक आदर्शों के मुलभूत मूल्य हैं। बुरी ताकतें लहरें पैदा करती हैं, शायद बड़े बुलबुले, जो अपने आप फूट जाते हैं, क्योंकि प्रकृति उन्हें हमेशा के लिए रहने की इजाज़त नहीं देती है।

हालांकि किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि गुरुदेव परेशानी और अपमान से मुक्त थे। कई मौकों पर उन्हें झुंझलाहट भी हुई, हालांकि उन्हें विश्वास था कि यह उनके राजनीतिक-वैचारिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल एक बाधा मात्र थी, लेकिन इससे उनका संकल्प और भी दृढ़ होता था। उदाहरण अनेक हैं। अपने 'चरित्रपूजा' में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि कैसे बंगालियों ने एक-दूसरे को नीचे खींचने के लिए हर तरह का प्रयास किया, भले ही इससे उन्हें लाभ न हुआ हो, लेकिन उन्होंने आनंद प्राप्त किया, क्योंकि इससे दूसरों को नुकसान हुआ। निबंधकार सजनीकांत दास, ('कर्मी रवींद्रनाथ' शीर्षक से प्रकाशित, 1937) के साथ अपनी चर्चा में उन्होंने दूसरों को परेशानी में डालने में बंगालियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति के बारे में जो महसूस किया उसे बताया। उनके अनुसार, यह एक समुदाय के रूप में बंगालियों के पतन का कारण था। बहरहाल, कवि ने कभी भी अपना दृढ़ संकल्प नहीं खोया और अपने उद्देश्य के लिए लगातार प्रतिबद्ध होकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया।

गुरुदेव की कड़ी मेहनत ने एक वैकल्पिक शिक्षाचिंता और सीखने की विधा के केंद्र का निर्माण किया। अतः विश्वभारती एक जीवित इतिहास है और एक जीवित दर्शन भी है। इसका एक समृद्ध विरासत वाला इतिहास है, जो 1921 में विश्वभारती की नींव के साथ शुरू हुआ। अध्यापन के एक विशिष्ट रूप के साथ, विश्वभारती एक सर्वांगीण व्यक्तित्व विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध था। यह न केवल औपचारिक पाठ्यक्रमों के जरिए था बल्कि सीखने के अन्य सभी तरीके, जिन्होंने मानवता को उसकी वास्तविक भावना और बनावट में खिलने में योगदान दिया था, के द्वारा था। इसलिए कवि ने लोगों को विश्वविद्यालय से जोड़ने के लिए कई रस्में शुरू कीं। उदाहरण के लिए, बुधवार को नियमित प्रार्थना केवल किसी विशिष्ट धार्मिक उद्देश्य के लिए नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक मतभेदों के बावजूद लोगों को एक साथ लाने के लिए एक मंच तैयार करना इसका उद्देश्य है। इसी तरह, अन्य नियमित अनुष्ठान, जैसे पौष उत्सव, वसंत उत्सव, वृक्षरोपण (पेड़ लगाना), हलकर्षण (खेती के मौसम का स्वागत करना), बैतालिक (सुबह के जुलूसों में शांतिनिकेतन और श्रीनिकेतन में गीतों के साथ) तथा अन्य। इन आयोजनों के सामाजिक उद्देश्य होते हैं, अर्थात् ऐसे अवसरों पर, विश्वविद्यालय से जुड़े लोगों को एक दूसरे से और परिसर के आसपास के गांवों के लोगों से जुड़ने का अवसर मिलता है। यह भी एक दुर्लभ हस्तक्षेप है जो गुरुदेव ने इसलिए किया क्योंकि वे हमेशा मानते थे कि अपने आसपास के लोगों के साथ विकसित होना सबकी नैतिक जिम्मेदारी है। यही कारण था कि गुरुदेव और उनके मशहूर पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर हमेशा मेला आयोजित करने के इच्छुक थे, क्योंकि यही वह अवसर था जब लोग बिना सामाजिक-सांस्कृतिक बाधा के बिना किसी सामाजिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रह के एक-दूसरे के साथ घुलमिल जाते थे।

यह सदमे और मोहभंग की बात है कि विश्वभारती की स्थापना के बाद से इसकी अग्रगति का मूल्यांकन किया जाय तो हम पायेंगे कि यह बहुत तेजी से नीचे की ओर चली गई है। एक दूरदर्शी होने के नाते, गुरुदेव रवींद्रनाथ ने इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के पतन की व्याख्या करने वाले अधिकांश कारणों को देखा। अन्यथा, उन्होंने गांधी को लिखे अपने पत्र में यह नहीं लिखा होता कि विश्वभारती जो [उनके] जीवन के सबसे अच्छे खजाने का एक जहाज [वाहक] है ... जो अपने देशवासियों से इसके संरक्षण के लिए विशेष देखभाल का

दावा कर सकता है' (टैगोर टू गांधी, 2 फरवरी, 1940)। इसके जवाब में महात्मा ने लिखा कि 'आपने मेरे हाथों में जो मार्मिक नोट रखा है ... मेरे दिल में चला गया है [क्योंकि] विश्वभारती एक राष्ट्रीय संस्था है; यह निस्संदेह अंतरराष्ट्रीय भी है। आप इसके स्थायित्व को सुनिश्चित करने के सामान्य प्रयास में मेरे द्वारा किए जाने वाले सभी प्रयासों पर निर्भर हो सकते हैं। (गांधी टू टैगोर, 19 फरवरी, 1940)। अपने उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध कवि ने विश्वभारती के लिए पैसे कमाने के लिए अपने संगीत और नृत्य मंडलियों के साथ कई यात्राएँ कीं। जब वे अपनी उम्र के 70 वें दशक की शुरुआत में थे, तो उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए धन जुटाने के लिए कई कार्यक्रमों में प्रदर्शन किया, जिससे गांधी परेशान थे। गुरुदेव को लिखे उनके पत्र में यह स्पष्ट था जब महात्मा ने यह कहकर अपनी पीड़ा व्यक्त की कि 'यह अकल्पनीय है कि आपको अपनी उम्र के इस पड़ाव में भीख मांगने के एक और मिशन पर जाना पड़ेगा। शांतिनिकेतन से बाहर गए बिना आवश्यक धन आपके पास आना चाहिए' (गांधी टू टैगोर, 13 अक्टूबर, 1935)। यह दिखाता है कि कवि की अपनी बौद्धिक रचना, विश्वभारती के लिए दिल से महसूस की जाने वाली कितनी चिंता है, जो उनके अनुसार, एक ऐसा स्थान था जहाँ पूरी दुनिया एक ही नीड़ में मिलती है (यत्र विश्वं भवति एक नीड़म्)। विश्वभारती वह जगह थी जहाँ मन का धन है जो सभी के लिए है। उनके विचार के केंद्र में मानवता के लिए कोलाहल बना हुआ है जो विभाजित होने के बाद अपनी क्षमता खो देता है। इसलिए, उन्होंने अपने रचनात्मक ग्रंथों में, सार्वभौमिक मानवतावाद में रुचि पैदा करने के लिए जोरदार तर्क दिया। यह उनके राजनीतिक-वैचारिक विश्वास का मूल है।

यहाँ, मुझे यह दिखाने के लिए एक चेतावनी जोड़नी चाहिए कि कैसे 1913 में गुरुदेव को नोबेल पुरस्कार की घोषणा के बाद शांतिनिकेतन एक अलस भरे शहर से एक जीवंत शहर में बदल गया। यह शान्तिनिकेतन के एक वर्ग के लिए आय का एक स्रोत भी हो गया जो गुरुदेव के समर्थन से भी फले-फूले। उदाहरण के लिए, औसत शैक्षणिक योग्यता वाले एक परिवार ने शांतिनिकेतन के आसपास जमीन बेचकर बहुत अधिक कमाई की, जो मुख्य रूप से धान खेत की जमीन थी। चूँकि जमीन की कीमत सस्ती थी, इसलिए इस परिवार ने बड़ी मात्रा में जमीन खरीदी, क्योंकि साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतने के बाद गुरुदेव को विश्वकवि के रूप में मान्यता मिलने के कारण इसकी कीमत बढ़ने वाली थी। परिवार ने सही

गणना की; जैसे ही रवीन्द्रनाथ पुरस्कार प्राप्त करके यूरोप से लौटे, कलकत्ते में हर कोई जो सामाजिक-आर्थिक रूप से उच्च स्तर पर था, शांतिनिकेतन में जमीन खरीदना और घर बनाना चाहता था। यह स्थान, अचानक, किसी की सामाजिक रैंकिंग में जोड़ने वाला बन गया। सरल शब्दों में, कलकत्ता के कुलीनों द्वारा जमीन खरीदना नोबेल पुरस्कार विजेता के करीब मान लिए जाने के कारण सामाजिक सम्मान हासिल करने के उनके प्रयास को दर्शाता था। एक पूर्व गांव अचानक बौद्धिक उत्थान का केंद्र बन गया। वह परिवार जिसने सस्ती दर पर जमीन खरीदी और कभी-कभी साधारण किसानों को मूर्ख बनाकर रातों-रात अत्यधिक अमीर हो गया।

उन विचारों से विचलन जो गुरुदेव को बहुत प्रिय थे

1921 में विश्वभारती की स्थापना और 1951 में केंद्रीय विश्वविद्यालय या "राष्ट्रीय महत्व के संस्थान" के रूप में इसके परिवर्तन के बीच का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कैसे विश्वविद्यालय व्यक्तिगत कलह का केंद्र बन गया। यह प्रक्रिया गुरुदेव के ज्येष्ठ पुत्र रथींद्रनाथ टैगोर को विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में ग्रहण करने के साथ शुरू हुई। रथींद्रनाथ को पहला कुलपति बनाने का एक कारण अतीत के साथ निरंतरता के विचार से शासित था, जिसे बनाए रखने में वे सक्षम थे। हालाँकि वे इस बात से पूरी तरह अनजान थे कि अपने पिता की अनुपस्थिति में विश्वभारती चलाना एक अलग तरह का खेल था, क्योंकि कवि के साथ काम करने वालों ने भी उनकी विरासत के सच्चे उत्तराधिकारी होने का दावा किया था। जब उनमें से किसी को भी शीर्ष स्थान नहीं दिया गया, तो असंतुष्ट आत्माएं उसके जीवन को बहुत कठिन और दयनीय बनाने के लिए एकजुट हो गईं। भारत की स्वतंत्रता के साथ स्थिति जटिल हो गई, क्योंकि राष्ट्रवादी नेता जो पहले विश्वभारती से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे, एक नए राष्ट्र के शासन में व्यस्त हो गए, जो 1947 के विभाजन के बाद विकलांग हो गया था। दूसरे शब्दों में, इस तथ्य को देखते हुए कि वे इतने दबाव में थे विभाजित देश के प्रबंधन की जिम्मेदारी के साथ उन्होंने उस समय विश्वभारती में क्या हो रहा था, इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। रथींद्रनाथ टैगोर को अपने पिता की देखभाल और मार्गदर्शन से फलने-फूलने वाले अपने सहयोगियों पर जरा भी अविश्वास नहीं था। वे न केवल उनके खिलाफ वित्तीय गबन के झूठे आरोपों, बल्कि चरित्र हीनता के भी झूठे आरोप लगाकर उन्हें

नुकसान पहुँचाने की उनकी क्षमता का आकलन करने में विफल रहे। वह अकेले पड़ गए और ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उन्हें दिल्ली में राष्ट्रीय महत्व के इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को संचालित करने के लिए जिम्मेदार लोगों का समर्थन प्राप्त था। कोई मदद नहीं मिल रही थी। ऐसी स्थिति पैदा हो गई जब उनके पास विश्वभारती को छोड़कर देहरादून चले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जहाँ 1961 में उनकी मृत्यु हो गई। हाल ही में, उपन्यासकार श्री नवकुमार बसु ने विश्वभारती में रथीन्द्रनाथ के कुलपति के रूप में रहने के दौरान एक अकेली आत्मा के रूप में उनकी व्यथा और पीड़ा का चित्रण किया है। (नवकुमार बसु, 'तोमार आलो तोमर आंधार' (बांग्ला में), प्रतिभास, कोलकाता, 2017)। संक्षेप में, रवींद्रनाथ उन लोगों के साथ व्यक्तिगत झगड़े का शिकार थे, जो रथींद्रनाथ ठाकुर के सच्चे उत्तराधिकारी घोषित होने के कारण उनसे स्पष्ट रूप से ईर्ष्या करते थे। जिस परिवार ने उच्च प्रीमियम के साथ सस्ते में खरीदी गई जमीन को बेचकर धन का साम्राज्य बनाया, वह उन प्रमुख परिवारों में से एक था, जिन्होंने इतना नीचे गिरकर उनके खिलाफ बदनाम अभियान का नेतृत्व किया, जो वर्णन से परे था। समकालीन बोलचाल में, वह परिवार उन पहले परिवारों में से एक था, जो स्थानीय भाषा में आर्थिक रूप से संपन्न हुआ, जिसे प्रमोटरी के व्यवसाय के रूप में जाना जाता है (यह एक ऐसा व्यवसाय है जो एक बिचौलिए के रूप में कार्य करके पैसे कमाने में मदद करता है)।

पूर्व कुलपतियों के संस्मरणों के अवलोकन से पुष्टि होती है कि रथींद्रनाथ को शक्तिशाली निहित स्वार्थ समूहों द्वारा नुकसान पहुँचाया गया था, जिसमें कई असंतुष्ट आत्माएँ शामिल थीं, जिनमें आश्रमिक, तथाकथित रवींद्रिक, स्थानीय राजनेता, व्यापारिक समुदाय, भूमि शार्क और कुछ शिक्षक शामिल थे। शायद इसलिए वे अपने शैक्षणिक प्रयासों से पूरी तरह से अलग हो चुके थे, और अराजकता पर टिके रहते थे। यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि इन्हीं कारणों से पूर्व कुलपति, प्रोफेसर निमाई साधना बसु ने विश्वभारती को भग्ननीड़ या ब्रोकन नेस्ट के रूप में चित्रित किया। बाद में, प्रोफेसर रजतकान्त रॉय ने बंगाली पत्रिका 'देश' (17 अगस्त, 2019) में अपने लंबे आलेख में कुछ चिंताओं को प्रतिध्वनित किया, जिन्हें उनके पूर्ववर्तियों ने रेखांकित किया था। उनके अनुसार, विश्वभारती का पतन हितधारकों से जुड़े आंतरिक विवाद और निहित स्वार्थों के जंगली प्रसार का परिणाम है। यहाँ

तक कि महान वैज्ञानिक, प्रोफेसर सत्येन बोस, जो विश्वभारती के एक पूर्व कुलपति थे, ने कहा था कि विश्वभारती का भविष्य अंधकारमय है, क्योंकि यह गुंडों का समूह है, और उन्हें इस बात का आश्चर्य था कि गलत उद्देश्य वाले इतने सारे लोग शान्तिनिकेतन जैसी छोटी जगह में कैसे रह लेते हैं। प्रोफेसर रॉय ने 'देश' के अपने निबंध में आगे जोड़ा कि विश्वभारती "बोलपुर भारती" और "शांतिनिकेतन" के बजाय, अशांतिनिकेतन बन गया है । शिक्षकों और प्रशासनिक कर्मी दोनों की नियुक्ति में निरंतर हस्तक्षेप के आरोप में दम है। उनका यह कहना सही था कि जानबूझकर इस तरह के कार्य ने विश्वभारती के आदर्श को उसके अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय चरित्र से विलग कर दिया, जो विश्वभारती, 'यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म' (जहाँ दुनिया एक ही घोंसले में घर बनाती है) के विपरीत थी। अपने कार्यकाल के दौरान, मैंने विश्वभारती की अकादमिक गतिविधियों का एक अंतरराष्ट्रीय केंद्र बनाने के लिए संस्थापक गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के विचारों के अनुरूप अकादमिक स्टाफ और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों दोनों की समुचित नियुक्ति करने के लिए कड़ी मेहनत की।

जब रवीन्द्र भवन से टैगोर का नोबेल पदक चोरी हो गया तो तथाकथित हितधारकों में से कोई भी शर्मिंदा नहीं हुआ; जब 1921 में संगीत भवन से मॉडरेट किए गए प्रश्नपत्रों को प्रसारित किया जाता है तो यह कभी भी चिंता का विषय नहीं बनता है। जब एक पूर्व कुलपति (प्रोफेसर दिलीप सिन्हा) को एक अपात्र उम्मीदवार को नौकरी प्रदान करने के लिए जेल में डाल दिया गया था, तो कोई स्टिंग नहीं किया गया था; जब एक और पूर्व कुलपति (प्रोफेसर सुशांत दत्तगुप्त) नियमित रूप से सीबीआई (केंद्रीय जांच ब्यूरो) की अदालतों में कई अवैध नियुक्तियां करने और नई नियुक्तियों को अनुचित लाभ देने के लिए नियमित रूप से उपस्थित होते हैं, तो कोई भी परेशान नहीं होता।

विश्वभारती का पतन बहुत तेज और दृश्यमान है जो पूरे देश में नैतिकता और बौद्धिक ईमानदारी के पतन का भी एक हिस्सा है। परिणामस्वरूप, विश्वभारती को नीचे खींचने के लिए हितधारकों द्वारा पोषित कुछ मूल्यों को छात्र आत्मसात करेंगे, यह आश्चर्यजनक नहीं लगता है। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि असंतुष्ट आत्माओं (शिक्षकों और अन्य) के उकसावे के बिना, छात्र इतने पटरी से नहीं उतरते कि उन्होंने अपनी मानवता खो दी, जो स्पष्ट था जब मेरे दो बच्चों के साथ 2021 में ग्यारह दिनों के लिए मेरा घेराव किया गया था। वे दैनिक जीवन के

लिए भोजन, दवा और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को रोकने की हद तक चले गए और यह हमारी कैद के उन दिनों के दौरान चुने हुए अपशब्दों के साथ दुर्व्यवहार द्वारा पूरक था। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह रवींद्रिक परंपरा थी! विश्वभारती में शामिल होने वालों ने अपनी मानवता खो दी है, जिसकी पुष्टि तब हुई जब हमारे ग्यारह दिनों की नजरबंदी के दौरान, विश्वभारती से आय पर जीवित रहने वालों में से किसी ने भी कुलपति को मुक्त करने के लिए आगे आने की जहमत नहीं उठाई। परिसर में, अधिकारियों के कमरे या इमारतों के अंदर होने की स्थिति में कार्यालयों के दरवाजे बंद करने की एक आम प्रथा है। यह तथाकथित छात्रों और उनके अन्तरंग साथियों की सम्मिलित गुंडागर्दी मात्र है। केवल अदालत ने ही हर अवसर पर एक उद्धारकर्ता के रूप में कार्य किया। विश्वभारती में नियम मूर्खों के लिए हैं और ताकत दिखाना सही है। यदि कोई कुलपति और उनकी टीम अन्य असंतुष्ट तत्वों द्वारा समर्थित इस गुंडागर्दी के खिलाफ खड़ी होती है, तो उसे मौखिक और शारीरिक दोनों तरह से लगातार हमले का सामना करना पड़ेगा। यदि कुलपति उपलब्ध नहीं होते हैं, तो रजिस्ट्रार और उनके कार्यालय के सहयोगियों को खामियाजा भुगतना पड़ता है, जैसा कि फरवरी, 2022 के अंतिम सप्ताह में हुई घटना ने प्रदर्शित किया। अपने कार्यालय में अवैध रूप से बंद होने के कारण, रजिस्ट्रार को शिव रात्रि पर अपने धार्मिक संस्कार करने की भी अनुमति नहीं थी और बीमार होने पर उनके सहयोगी, एक संयुक्त रजिस्ट्रार के लिए चिकित्सा देखभाल तक पहुँच से भी वंचित कर दिया गया था। क्या यह मानवता के उस अंश को दर्शाता है जिसके लिए गुरुदेव ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया? मैं आश्चर्यचकित हूँ। क्या इसका यह भी अर्थ है कि गुरुदेव उनके लिए अपने निजी स्वार्थों को पूरा करने का एक सुविधाजनक साधन हैं ; जैसे ही कोई बाधा आती है, तथाकथित हितधारक यह साबित करने में संकोच नहीं करते कि उनके लिए, रवींद्रिक होने के नाते रवींद्रनाथ अपने संकीर्ण लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक डिजाइन के अलावा और कुछ नहीं हैं।

लोगों को एक साथ लाना

सार्वभौमिक मानवतावाद के विश्वासी होने के नाते, मानवता के प्रति रवींद्रनाथ के दृष्टिकोण को सामूहिकता के लिए एक मंच बनाने के एक प्रयास को डिजाइन करने के लिए निर्देशित

किया गया है, क्योंकि उनका मानना था कि मानवता का सामना करने वाली अधिकांश समस्याओं को एकजुट होकर आसानी से हल किया जा सकता है। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, उन्होंने लोगों को उनकी सामाजिक रैंक की परवाह किए बिना आकर्षित करने के लिए कई कार्यक्रमों/अनुष्ठानों को तैयार किया। उनमें से प्रमुख है, उदाहरण के लिए, प्रत्येक बुधवार को काँच मंदिर या उपासना गृह में नियमित प्रार्थना। विश्वभारती में एक वर्ष में उनतालीस प्रार्थनाएँ होती हैं। जब कोई मंदिर के नियमित कार्यक्रमों में कम उपस्थिति को नोटिस करता है तो यह गंभीर पीड़ा का कारण बनता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या तथाकथित रवींद्रिक इस पर घड़ियाली आँसू बहाएँगे! इसी प्रकार बैतालिकों में (आश्रम क्षेत्र में विशेष अवसरों पर प्रात:कालीन सामूहिक वंदना एवं जुलूस), जिनकी संख्या पाँच होती है, विश्वभारती से आय पर फलने-फूलने वालों की उपस्थिति उनकी तथाकथित रावीन्द्रिकी ईमानदारी के बारे में संदेह पैदा करने के लिए बहुत कम है। हालांकि विश्वभारती में यह अजीब नहीं है, क्योंकि स्वघोषित रावीन्द्रिकी होना आर्थिक और अन्य सम्मान हासिल करने का एक साधन है। तथाकथित आश्रमिक के बारे में भी यही सच है, जो आज के विश्वभारती की भलाई में शायद ही योगदान करते हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से उनसे एक कॉर्पस फंड बनाने के लिए वित्तीय योगदान के लिए संपर्क किया, जो इस तथ्य के बावजूद (फण्ड) यहाँ मौजूद नहीं है कि यह विश्वविद्यालय सबसे पुराना केंद्रीय विश्वविद्यालय है। मेरी निराशा के लिए, उनसे कोई मदद नहीं मिली, जिसका अर्थ है कि वे विश्वभारती सत्ता को तब तक उच्च सम्मान में रखते हैं जब तक उनके पक्षपातपूर्ण लाभ की रक्षा की जाती है; जैसे ही यह अन्यथा होगा, वे मानवीय अखंडता के अपने आश्चर्यजनक निम्न स्तर को दिखाने के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के अपने नुकीले दाँत निकाल लेंगे।

ऐसा लगता है कि कुछ अकादमिक संकाय इस चक्रव्यूह में फंस गए हैं। वे परिसर में इस तरह के निराशाजनक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण और उसे बनाए रखने में उनके निंदनीय योगदान को पहचाने बिना प्रशासन को जिम्मेदार ठहराते हैं। सबसे अधिक मोहभंग करने वाली बात यह है कि वे छात्रों को उनकी अन्यायपूर्ण मांगों पर जोर देने के लिए उकसाने से भी गुरेज नहीं करते। यह और कुछ नहीं बल्कि अपने संकीर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूसरों

का उपयोग करने की एक योजना है। यहाँ मैं उनका ध्यान जर्मन कवि, मार्टिन निमोलर (1892-1984) की प्रसिद्ध कविता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिन्होंने लिखा:

पहले, वे समाजवाद के लिए आए, और मैं कुछ नहीं बोला -
क्योंकि मैं समाजवादी नहीं था।
फिर वे ट्रेड यूनियनिस्ट के लिए आए, और मैं कुछ नहीं बोला -
क्योंकि मैं ट्रेड यूनियनिस्ट नहीं था।
तब वे यहूदियों के लिये आए, और मैं ने कुछ न कहा -
क्योंकि मैं यहूदी नहीं था।
तब वे मेरे लिये आए, और मेरे लिये बोलने को कोई न बचा।

उन लोगों का समर्थन करके जिन्हें मानवीय सरोकार नहीं है, और न ही गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की महान विरासत के प्रति कोई सम्मान है, विश्वभारती का असंतुष्ट शैक्षिक संकाय भस्मासुर तैयार करने के कार्य में सहयोग कर रहा है। जो जल्द ही या कुछ बाद में उनकी पीड़ा का एक बेकाबू स्रोत होगा। यह एक ऐतिहासिक सत्य है। इतिहास के कई दिग्गज लुप्त हो गए क्योंकि वे मानवता और उन मूल्यों के खिलाफ खड़े हुए जिन्होंने बाधाओं के बावजूद मानवता को बनाए रखा। इस तरह के गैर-जिम्मेदार व्यवहार का एक परिणाम फरवरी, 2022 के अंतिम सप्ताह से शुरू हुई घटनाओं में स्पष्ट था। विश्वभारती के तथाकथित छात्रों की अनियंत्रित भीड़ इतनी नीचे गिर गई कि यह उन लोगों के लिए गंभीर दिल की जलन का कारण बनता है। जो वास्तव में विश्वभारती की विरासत की रक्षा करना चाहते थे। जिन लोगों ने 2018 में गार्ड के परिवर्तन के बाद से अपना आधिपत्य खो दिया है, वे हालांकि एक बार सत्ता में आने के बाद खुश हो गए। मैं उन्हें निमोलर की उपरोक्त कविता की याद दिलाता हूँ। इतिहास एक निष्पक्ष न्यायाधीश है और उन्हें बख्शा नहीं जाएगा; उनका आर्थिक लाभ और उनकी स्पष्ट उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा, जो उन्होंने टैगोर की दिव्य उपलब्धियों से जुड़े होने के कारण भौतिक रूप से प्राप्त की, भविष्य के सामाजिक-वैचारिक हिमस्खलन के सामने पर्याप्त नहीं हो सकते हैं। इतिहास उन्हें विश्वभारती को उच्च ऊंचाई पर ले जाने के प्रयासों को रोकने के लिए नापाक मंसूबों को तैयार करने के लिए माफ नहीं करेगा, क्योंकि कुछ अधिकारी निर्णय निर्माताओं के रूप में अपने प्रवास के दौरान कार्य में लगे हुए थे।

परिसर में गड़बड़ी के लिए छात्रों को दोष देना आसान है। यह निश्चित रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सरल है कि जो लोग उनके लिए एक विशेष कार्यवाही करते हैं, वे मुख्य अपराधी थे। किसी के आचरण या दुराचरण की प्रकृति सबसे पहले परिवार में समाजीकरण का परिणाम है। भारतीय शब्दावली में, एक बच्चा अपने परिवार से संस्कार प्राप्त करता है। संस्कार यदि बच्चे को कुटिल बनाना है, तो यह उसके व्यवहार में बाद में झलकता है। इसलिए, परिवार के बुजुर्गों की जिम्मेदारी है कि वे सही प्रकार के संस्कार प्रदान करें। बाद में, स्कूल और कॉलेज दोनों में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, आज के छात्र वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा उन्हें परिवार, विद्यालय,और सहपाठियों द्वारा सिखाया जाता है । यह सामाजिक पतन और सांस्कृतिक निम्नगामिता की अभिव्यक्तियों में से एक है जो समकालीन भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिसर में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

पश्चिम बंगाल में, विभिन्न ऐतिहासिक कारणों से अकादमिक परिवेश सबसे अधिक चिंतनीय है: पश्चिम बंगाल विभाजन के कारण पीड़ित था; विभाजन पूर्व बंगाल के दूसरी तरफ से असहाय लोगों के अचानक आने से भी इसका नुकसान हुआ; प्रांत को इन शरणार्थियों को समायोजित करना पड़ा; 1970 के दशक में नक्सली आंदोलन के प्रकोप के कारण राज्य को भी नुकसान उठाना पड़ा, जिसने सर्वहारा क्रांति लाने के बजाय राज्य को सर्वहारा बना दिया, क्योंकि इसने भारत के अन्य कम राजनीतिक रूप से परेशान हिस्सों में पूंजी का पलायन और प्रतिभा का पलायन दिखा; प्रांत ने तीन दशकों से अधिक समय तक सत्ता में रहने के बाद वाम सरकार के उत्थान और पतन को देखा; राज्य ने अन्य लागतों पर वित्तीय रूप से लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्तियों के उद्भव और दृढ़ीकरण को भी देखा; इसने बाहुबल के बढ़ते महत्व को भी देखा, जिसका खामियाजा मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को उठाना पड़ा; प्रांत ने 2011 में राजनीतिक आकांक्षाओं के परिवर्तन को देखा, जो कि लोकप्रिय बोलचाल में, जर्सी के परिवर्तन के रूप में वर्णित था, क्योंकि अतीत में विकसित हुई प्रणाली को सत्ता के स्थानीय क्षेत्राधिकारियों के उदय के साथ शायद अधिक उग्रता के साथ रहने की अनुमति दी गई थी, जिससे अपने राजनीतिक आकाओं के लिए वोट बटोरने में महत्वपूर्ण भूमिका होती थी । इसलिए, राज्य ने शीर्ष राजनीतिक आकाओं और उनके स्थानीय शिष्यों के बीच एक पारस्परिक व्यवस्था के विकास और समेकन को देखा। राज्य स्तर पर बनाई गई नीतिगत

रूपरेखाओं के कार्यान्वयन में वे महत्वपूर्ण खिलाड़ी बने रहते हैं, जो उन्हें राज्य स्तर के राजनीतिक आकाओं के लिए लंबे समय तक सत्ता में रहने के लिए अपरिहार्य बनाते हैं।

भयावह सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को देखते हुए, निजी क्षेत्र में रोजगार लगभग शून्य है, जिसके कारण लोगों को सरकारी और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरियों के लिए जाना पड़ा। इस तरह की कमी से बिचौलिए पैदा होते हैं जो सरकारी एजेंसियों और नौकरी चाहने वालों के बीच पैसे और अन्य लाभों के लिए मध्यस्थता करते हैं जो स्थानीय बाहुबली को सरकारी और अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों में नियुक्ति प्रदान करने की क्षमता के अनुरूप आधार बनाने में मदद करते हैं। इसके बहुत से उदाहरण मिल जाएँगे। हाल ही में (2022 में) कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नौकरी के इच्छुक सफल उम्मीदवारों की सूची को रद्द घोषित करके इन प्रवृत्तियों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने जो देखा वह सिर्फ हिमशैल का सिरा है, क्योंकि कदाचार आदर्श बन गए हैं, जैसा कि हाल ही में उच्च न्यायालय की टिप्पणियों से पता चलता है। क्या पूँजी के पलायन और प्रतिभा के पलायन का मतलब यह है कि पश्चिम बंगाल का कोई भविष्य नहीं है? एक निर्णायक उत्तर नहीं हो सकता है, हालांकि पूरी तरह से आशावादी होने में थोड़ी अनिश्चयता है।

ऐसे में इस निरंतर गिरावट को कैसे रोका जा सकता है? या, विश्वभारती धीरे-धीरे शिक्षा के केंद्र के रूप में मिट जाएगी? मैं एक कहानी साझा करना चाहता हूँ जो मैंने तीन दशकों से अधिक समय तक विश्वभारती की सेवा करने वाले शिक्षाविदों में से एक से सुनी। कहानी इस तरह चलती है: एक दिन, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से तीन कुलपति भगवान शिव के पास उन विश्वविद्यालयों के भविष्य का पता लगाने गए, जिनकी उन्होंने अध्यक्षता की थी। एक पश्चिम से था, दूसरा सुदूर-पूर्व से और तीसरा विश्वभारती से। पश्चिम के कुलपति को भगवान शिव ने सांत्वना दी कि उनकी अधिकांश समस्याएं पच्चीस वर्षों में समाप्त हो जाएगी; सुदूर पूर्व के उनके सहयोगी मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ बाहर आए क्योंकि भगवान शिव ने उन्हें निश्चित रूप से आश्वासन दिया था कि उनका विश्वविद्यालय तीस वर्षों में परेशानी से मुक्त हो जाएगा; अब विश्वभारती के कुलपति की बारी थी। उन्हें देखते ही भगवान शिव रोने लगे क्योंकि उन्हें खुद यकीन नहीं हो रहा था कि विश्वभारती ने जो वैभव अतीत में हासिल किया था, वह उनके जीवन काल में वापस आ सकता है या नहीं! कहानी का सारमर्म इतना स्पष्ट है

कि विस्तार की जरूरत नहीं है। विश्वभारती के भविष्य ने भगवान शिव को चिंतित कर दिया क्योंकि वे एक विशिष्ट समय-सीमा प्रदान करने में असमर्थ थे, जो उन्होंने पश्चिम और सुदूर-पूर्व के कुलपतियों को दिया था। कहानी थोड़ी अतिरंजित हो सकती है, क्योंकि विश्वविद्यालय के सामने आने वाली समस्याएँ दुर्गम प्रतीत नहीं होती हैं, बशर्ते हितधारक उस दृष्टिकोण के प्रति दृढ़ बने रहें जो इसके महान संस्थापक के पास था, जब उन्होंने ज्ञान के निर्माण और प्रसार की इस वैश्विक पीठ की शुरुआत की थी। यह अच्छी तरह से प्रमाणित है कि विश्वभारती, वर्षों से, पक्षपातपूर्ण लक्ष्यों को पूरा करने का केंद्र बन गया है, जिससे यह आम धारणा बन गई है कि यहाँ नियमों और अधिनियमों का कोई मतलब नहीं है। सब कुछ 'दादागिरी' या मांसपेशियों को फड़का करके किया जा सकता है। मैं अपने पूर्ववर्तियों को दोष नहीं देता; उनकी अपनी सीमाएँ हो सकती हैं जो उन्हें परेशानी से बचने या संस्था की कीमत पर शांति खरीदने के लिए नियमों और विनियमों को कम करने के लिए मजबूर किया होगा। फिर भी, मैं अपने कर्तव्य में असफल हो जाउँगा, यदि मैं इस तथ्य को रेखांकित नहीं करता कि विश्वभारती का कुलपति एक शपथ ग्रहण करने वाला प्रमुख है जो तेजी से बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल रखते हुए विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता के साथ कार्य को स्वीकार करता है, उस सामाजिक-आर्थिक परिवेश और उन विचारों के साथ जो गुरुदेव टैगोर ने इस शैक्षणिक संस्थान के लिए मूलभूत सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए प्रतिपादित किया था। जब तक इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय नहीं बनाया गया, तब तक विश्वभारती के प्रमुख के लिए प्रशासन का कार्य करना आसान था, क्योंकि 1951 का विश्वभारती अधिनियम अस्तित्व में नहीं था। इस अधिनियम को अपनाने के साथ, विश्वभारती ने अपने अस्तित्व के लिए केंद्रीय राजकोष से वित्तीय अनुदान प्राप्त करना शुरू कर दिया, जिसने विश्वविद्यालय को नियमों और अधिनियमों के ढांचे के भीतर रखा, जिसका उल्लंघन केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में इसके अस्तित्व के लिए हानिकारक था। इसलिए, भारत सरकार के शिक्षा विभाग के अधीन कुलपति और पूरा प्रशासन प्रशासकों की निगरानी में आ गया। यह एक ही समय में, विश्वविद्यालय से जुड़े कई लोगों के लिए अच्छा भी हुआ और बुरा भी। यह इसलिए अच्छा था कि केंद्र सरकार द्वारा अधिग्रहण ने राज्य द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों में काम करने वालों की तुलना में एक अच्छा वेतन पैकेज सुनिश्चित किया और साथ ही वेतन और अन्य लाभों को नियमित रूप से जारी करना जो राज्य-प्रबंधित विश्वविद्यालयों में उनके समकक्षों

को उपलब्ध नहीं थे; यह बुरा इसलिए था कि अब, उन्होंने अपनी स्वतंत्रता खो दी, जिसका आनंद उन्होंने विश्वभारती के केंद्रीय विश्वविद्यालय बनने से पहले प्राप्त किया था। स्पष्ट कारणों से यह उनके लिए एक जीत की स्थिति नहीं थी। नियमों और अधिनियमों पर लगाए गए प्रतिबंधों की पकड़ समय के साथ सख्त हो गई जो मोहभंग का एक स्रोत था, हालांकि उन्होंने अपने मासिक वेतन में वृद्धि पर कभी निराशा व्यक्त नहीं की। इसलिए, कहावत मान्य है कि "जब तक एक प्रणाली किसी को अधिकारों का आनंद लेने की अनुमति देती है, तब तक वह चंद्रमा के शीर्ष पर है; लेकिन जिस क्षण किसी को अपने कर्तव्यों की याद दिलाई जाती है, वह सबसे अधिक क्रोधित आत्मा बन जाता है"। पूर्व कुलपतियों के रिकॉर्ड किए गए संस्मरणों का अवलोकन इस बात की निश्चित रूप से पुष्टि करता है। जैसे-जैसे दिन बीतते गए स्थिति और खराब होती गई। इसका एक कारण शायद विश्वभारती पर निहित स्वार्थों के हमलों के खिलाफ खड़े होने में विश्वविद्यालय के अधिकारियों की विफलता थी। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे अधिकारी अपने पक्षपातपूर्ण हितों को पूरा करने की चाह रखने वालों के दबाव के आगे झुके, विश्वभारती ने अधिनियम के जनादेश और उन मूल्यों से भी हटना शुरू कर दिया, जिन्हें गुरुदेव रवींद्रनाथ ने शिक्षार्थियों के बीच स्थापित करने की मांग की थी ।

समाधान क्या है?

किसी कुलपति के पास अलादीन का जादुई चिराग नहीं होता । इसलिए, हमें उन मूल सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए तेजी से विश्वभारती को पुनर्जीवित करने के तरीकों और साधनों का सुझाव देने की आवश्यकता है, जिन पर यह टिकी हुई है।

सबसे पहले, जो विश्वभारती से प्यार करते हैं, उन्हें किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि गुरुदेव टैगोर की भव्य दृष्टि की रक्षा के लिए एक साथ आने की जरूरत है। विश्वविद्यालय के तथाकथित शुभचिंतकों के निहित स्वार्थों को देखते हुए यह आसान काम नहीं हो सकता। न ही यह रातों-रात किया जा सकता है, क्योंकि विश्वभारती का पतन 1951 में केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में इसके उन्नयन के बाद से शुरू हुआ था, जैसा कि श्री नवकुमार बसु द्वारा हाल ही में प्रकाशित जीवनी-उपन्यास में बहुत ही प्रेरक तर्क दिया गया है । एक बहुत

ही धीमी प्रक्रिया होने के बावजूद, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक बार मिशन मोड में मानव प्रयास किए जाएँ तो कुछ भी असंभव नहीं होगा।

दूसरे, विश्वभारती पर जीवित रहने वालों की मानसिकता को भी बदलने की जरूरत है। यह अजीब नहीं लगता कि स्थानीय होटल व्यवसायी, छोटे दुकानदार, ई-रिक्शा चलाने वाले और अन्य व्यवसायी इस बात पर जोर दे रहे हैं कि विश्वभारती को पौष मेला और वसंत उत्सव का आयोजन करना चाहिए, क्योंकि ये दोनों कार्यक्रम भारी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिसका अर्थ है कि यदि वे आयोजित नहीं होते हैं, उनकी आय का एक प्रमुख स्रोत गायब हो जाता है। इसलिए, इन आयोजनों को आयोजित करने पर जोर केवल एक विशेष उद्देश्य के साथ उस वर्ग के स्वार्थी हितों द्वारा नियंत्रित होता है, क्योंकि वे इन आयोजनों को आयोजित करने में शायद ही मदद करते हैं जो कि विश्वभारती की जिम्मेदारियां हैं। इन दोनों आयोजनों में प्रतिदिन दो लाख से अधिक की नियमित भीड़ देखी जाती है। विश्वभारती के पास इतनी बड़ी भीड़ को प्रबंधित करने के लिए न तो जनशक्ति है और न ही इन घटनाओं को सामान्य स्थिति में लाने के लिए वित्तीय ताकत है। मेरे कार्यकाल के दौरान, यह कुछ संकाय सदस्यों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और कुछ देखभाल करने वाले छात्रों द्वारा किया गया था। वसंत उत्सव के बारे में भी यही सच है जो अब वसंत तांडव (वसंत भगदड़) में सिमट गया है, जिसका अर्थ है कि घटना का आनंद लेने के लिए एक समझदार भागीदार होने के बजाय, इसका उपयोग कई लोगों द्वारा कामुक इच्छाओं को पूरा करने के लिए भी किया जा रहा है। यह 2019 में स्पष्ट था; हमारी छात्राओं को उनकी सुरक्षा के लिए आश्रम मैदान के बगल में एक छात्रावास में ले जाया गया, जहाँ 2019 वसंत उत्सव का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद हमें कई पत्रकारों द्वारा विशेष रूप से महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार के बारे में सूचित किया गया था। प्रांत के विभिन्न हिस्सों और बाहर से अनगिनत कारों के आने से शहर पंगु हो गया था, और पुलिस द्वारा यातायात प्रबंधन पूरी तरह से विफल था, क्योंकि यातायात वास्तव में भारी था और पुलिस के पास इतने सारे लोगों की आवाजाही का प्रबंधन करने के लिए पर्याप्त जनशक्ति नहीं थी। मुझे बताया गया कि सिर्फ आधा मील की दूरी तय करने के लिए दो घंटे से ज्यादा की समय लगा। बोलपुर और शांतिनिकेतन के निवासियों के लिए यह एक भयानक अनुभव था। घटना के अगले दिन

स्थिति भयावह थी, हमने जमीन से कई वाइन, बीयर, रम और व्हिस्की की बोतलें और प्लास्टिक के पानी के कई पाउच एकत्र किए। जिन लोगों ने विश्वभारती की कीमत पर बहुत अधिक कमाई की, वे पौष मेला या वसंत उत्सव के बाद कभी भी जमीन को साफ करने के लिए आगे नहीं आए, क्योंकि वे खुशी-खुशी अपनी जिम्मेदारी का त्याग कर देते हैं, जो हमें विश्वास दिलाता है, विश्वभारती के साथ है, जो आगे पुष्टि करता है कि हम अपने आनंद का आनंद लेंगे। अपने कर्तव्यों का सम्मान किए बिना अधिकार। और जो लोग इस कार्यक्रम का आनंद लेने आए थे, उनमें से अधिकांश ने उन विचारों के प्रति संवेदनशील होने की जहमत नहीं उठाई, जो गुरुदेव टैगोर द्वारा अपने सबसे छोटे बेटे, समीन्द्रनाथ टैगोर के आग्रह पर वसंत उत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया था। बाहरी लोगों के लिए भी यह पिकनिक का दिन था, क्योंकि जब हमने कार्यक्रम के एक दिन बाद सफाई अभियान शुरू किया तो हमें जगह-जगह जमीन पर बहुत सारा बिखरा हुआ खाद्य पदार्थ मिला।

तीसरा, विश्वभारती द्वारा नियमित रूप से आयोजित होने वाले अन्य कार्यक्रम (बुधवार की प्रार्थना, वृक्षरोपोण, हलकर्षण, माघ उत्सव, शिल्पोत्सव) पौष मेला या वसंत उत्सव के समान आकर्षक नहीं हैं, क्योंकि वे इनकी तरह पैसा बनाने के हास्यास्पद स्रोत नहीं हैं। यहाँ मुझे यह जोड़ना होगा कि पौष मेला स्थानीय कारीगरों के लिए अपने हाथ से बने उत्पादों को बेचने के लिए एक प्रयोग के रूप में शुरू हुआ था, जो अब ऐसा नहीं है, क्योंकि उन्हें शायद ही खरीदार मिलते हैं। वे तो ज्यादातर उन दुकानों पर जाते हैं जो अत्यधिक व्यावसायिक माल बेचते हैं। इसलिए, कई मरते हुए हस्तशिल्प की मदद करने के बजाय, पौष मेले ने देश के कई हिस्सों के अमीर व्यापारियों को विशेष लाभ पहुचाया है। ऑनलाइन बुकिंग की प्रणाली शुरू होने से पहले स्टाल वितरण की गहन जाँच से एक घोटाले का पता चला जिसमें विश्वभारती से जुड़े कई लोगों के शामिल होने का आरोप लगाया गया था। इसका यह तर्क नहीं है कि पौष मेला बंद कर देना चाहिए; यह सिर्फ ऊपर उल्लिखित विसंगतियों को दूर करने के लिए, उन लोगों से अपील करने के लिए है जो रवींद्रिक परंपरा को सही अर्थों में आगे बढ़ाने के इच्छुक हैं।

चौथा, विश्वभारती की बदनामी इस आरोप के कारण हुई कि कई शिक्षकों के सप्ताह में केवल एक बार परिसर में आने की सूचना मिली थी। श्रीनिकेतन परिसर के एक अकादमिक

स्टाफ ने मुझे इस पर एक बहुत ही रोचक कहानी सुनाई। उनके अनुसार, कई संकाय सदस्य थे जो सुबह कोलकाता से निकलने वाली गौड़बंग एक्सप्रेस को पकड़कर शान्तिनिकेतन परिसर में आते थे, जिससे शिक्षकों को सुबह 9 बजे से कक्षाएं लेने में मदद मिले; उन्हें 1-10 बजे शांति (शांतिनिकेतन एक्सप्रेस) पकड़ने की अनुमति देने के लिए एक विशेष प्रारूप में कक्षा कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। बोलपुर स्टेशन जाने से पहले, वे हमेशा मछली के स्थानीय विक्रेता लखपति से मछली खरीदते थे, क्योंकि उसे अच्छी गुणवत्ता वाली मछलियाँ देने की प्रतिष्ठा थी। मैंने समय-सारणी की जाँच की और अपने आश्चर्य के लिए, मैंने पाया कि यह झूठा होने से बहुत दूर था। मुझे यह भी सूचना मिली कि ये यात्री शांतिनिकेतन एक्सप्रेस के डी-2 डिब्बे में आम तौर पर एक साथ बैठते हैं। कुलपति के रूप में अपने कार्यकाल की शुरुआत में, मैं ट्रेन के डी-2 डिब्बे में यह देखने के लिए बैठा था कि क्या यह सच है। और, मेरे आश्चर्य के लिए, यह भी झूठा होने से बहुत दूर था। मेरी चौकीदारी से हालात सुधरते नजर आ रहे हैं और शिक्षकों की अनुपस्थिति पहले की तरह गंभीर नहीं लगती।

पाँचवाँ, कार्यालय में अनुपस्थिति या देर से उपस्थिति ने कभी भी विश्वभारती के पूर्णकालिक कर्मचारियों को परेशान नहीं किया। प्रारंभ में, मुझे पता चला कि गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए कोई समय निर्धारित नहीं था और वे स्थानीय राजनीतिक आकाओं द्वारा संरक्षित होने के कारण सजा से बच गए। मेरे नियमित अभियान से, इस मुद्दे को निर्णायक रूप से संबोधित किया गया था, मैंने मान लिया। कुछ देर बाद मुझे बताया गया कि पहले की आदत खुशी-खुशी लौट आई थी, शायद उन्हें लगा कि इस पर ध्यान नहीं जाएगा। आश्चर्य की बात यह थी कि इस बीमारी ने अधिकारियों से लेकर चपरासी तक सभी को अपनी चपेट में ले लिया। मैंने केंद्रीय प्रशासनिक कार्यालय सहित कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया और एक नियम बनाया कि कर्मचारियों को उपस्थिति रजिस्टर में अपने हस्ताक्षर करने होंगे जो कुलपति के सचिवालय में रखे गए थे। मेरे पास यह मानने के कारण हैं कि इस बीमारी को एक सही तरह की दवा मिल गई है और अनुपस्थिति की समस्या, तथा देर से उपस्थिति अतीत की बात लगती है। मैं एक जानकारी साझा करता हूँ जो विश्वभारती के पूर्व छात्र थे और अब बोलपुर के एक स्कूल में कार्यरत हैं। मुझे धन्यवाद देने के बाद, उन्होंने बताया कि बोलपुर के दुकानदारों ने मेरा आभार व्यक्त किया, क्योंकि टिफिन बॉक्स की बिक्री तेजी से बढ़ी थी।

उन्होंने आगे कहा कि मेरे आने से पहले विश्वभारती के कर्मचारियों को टिफिन बॉक्स का अंदाजा नहीं था, क्योंकि वे अपनी मर्जी से ऑफिस आते और चले जाते। इसलिए, उन्होंने कभी भी नियम पुस्तिका के अनुसार आधे घंटे के लंच ब्रेक का पालन करने की आवश्यकता महसूस नहीं की। कहानी सुनाने का उद्देश्य यह बताना है कि गैर-शिक्षण कर्मचारियों को अपनी उपस्थिति में समय का पाबंद होना चाहिए और अपने आवंटित कार्यों को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अधिकारियों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उदाहरण के द्वारा दिखाएँ जिसका अर्थ है कि वे समय पर कार्यालय आकर नियम पुस्तिका का भी पालन करते हैं।

अंत में, यह मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं है, उन साधनों को लागू करके प्रतिबद्धता पैदा करना जो सुखद नहीं हो सकते हैं। प्रतिबद्धता अपने आप में सहज रूप से आनी चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि जो लोग विश्वभारती के लिए काम करते हैं, चाहे वे किसी भी रैंक के हों, उन्हें करदाताओं के पैसे से नियमित रूप से अच्छा भुगतान किया जा रहा है। निजी क्षेत्रों में काम करने वालों की तुलना में, और अन्य विश्वविद्यालयों में भी, विश्वभारती के कर्मचारियों को लाभ और सुविधाओं के मामले में भी बेहतर स्थान मिला है। विश्वविद्यालय में काम करके हम कोई मेहेरबानी नहीं करते हैं, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हम जो मानव दिवस देते हैं, उसके लिए हमें भुगतान मिलता है। इसलिए हमें विश्वविद्यालय के प्रति, अपनी प्रतिबद्धता के प्रति नैतिक रूप से संवेदनशील होने की आवश्यकता है। किसी को भी अपने सहयोगियों या प्रशासनिक जिम्मेदारियों को निभाने वाले सहयोगियों को अपमानित करने का अधिकार नहीं है, जिसमें कुलपति, रजिस्ट्रार, प्राचार्य, विभाग प्रमुख और अन्य कार्यालय धारक शामिल हैं। यह हमारे नैतिक दिवालियापन को दर्शाता है। क्या अधिकारियों को हटाने से व्यापक रूप से प्रचारित चिंताओं का समाधान होगा? यदि ऐसा होता, तो नए कुलपति के आने और प्रशासकों की एक नई टीम के गठन के साथ विश्वभारती के स्वयंभू संरक्षकों द्वारा उठाए गए परेशानी वाले मुद्दे तुरंत गायब हो जाते। मैंने ज्यादातर छात्रों, शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों द्वारा ऐसी उत्तेजना के मुख्य कारणों को समझा है जो पवित्र नहीं हो सकते हैं; विश्वभारती से नियमित आय प्राप्त करने वालों के बीच इसकी गहन चर्चा की आवश्यकता है, क्योंकि यह वह कहावत है जो नियमित अंतराल

पर सोने का अंडा देती है। हंस को देखभाल, चिंता और करुणा के साथ पालने की जरूरत है। यदि हम विचलन करते हैं, तो शायद यह हमारे लिए एक हारा-किरी होगा जो इस महान शैक्षणिक संस्थान द्वारा अपनी आय से अपने भौतिक लक्ष्यों को पूरा कर रहे हैं। अपनी खुद की कब्र खोदने के बजाय, आइए हम एक साथ विचार-मंथन करें, ताकि स्वार्थ की रक्षा के लिए नहीं बल्कि विश्वभारती के बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने की दृष्टि से समाधान निकाला जा सके। हमारे सामने यही एकमात्र कार्य है; अन्यथा, विश्वभारती की राजनीतिक-वैचारिक नींव को बनाए रखने में हमारी विफलता और रवींद्रिक परंपरा के सच्चे संरक्षक के रूप में उचित भूमिका निभाने में अपनी अक्षमता के कारण हम इतिहास के खलनायक बन जाएंगे।

इस संदेश का उद्देश्य पूर्व में विश्वभारती के लिए काम करने वालों, और अब काम करने वालों के योगदान को कम करके आँकना नहीं है, बल्कि इस प्रचलित लोकोक्ति को पुष्ट करना है जिसमें कहा गया है कि "दसे मिले कोरी काज, हारी-जीती नाहीं लाज" (अगर हम मिलकर साथ काम करते हैं तो भले ही हम हार जाएँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता)। यह अंग्रेजी कहावत की पुन: पुष्टि है कि "यूनाइटेड वी विन, डिवाइडेड वी फॉल"। यहाँ गुरुदेव टैगोर की इस धारणा का मूल है कि उन्होंने जीवन भर विरोधियों के बीच उनका साथ दिया। आइए फीनिक्स की तरह उठें जो विश्वभारती के संस्थापक के आशीर्वाद से असंभव नहीं है।